ज्ञानशाला जीवन निर्माण की प्रयोगशाला

– आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर। ''ज्ञानशाला एक ऐसा उपक्रम है जिसमें छोटे छोटे बच्चों में ज्ञान–वृद्धि के अनेक आयाम है। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चे नए–नए प्रयोग सीखते हैं, जिनसे उनकी आदतों का परिष्कार होता है। ज्ञानशाला जीवन निर्माण की प्रयोग शाला के रूप में कार्य करती है। इससे बच्चों के भविष्य निर्माण का पथ प्रशस्त होता है। उनमें संस्कारों का निर्माण किया जा सकता है। उन्हें ज्ञान से युक्त, संस्कार से युक्त बनाने का प्रयास होता है। बच्चों में ज्ञान की विशेष आवश्यकता होती है, क्योंकि उनका लम्बा जीवन है''। – उक्त उद्‌गार राष्ट्रसंत युवामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण ने आयोजित धर्मसभा में ज्ञानशाला के नन्हें–मुन्नों की भाव–भरी गीतिका ''म्हारां देवता पधार्‌या, आया सामने सा'' की प्रस्तुति पर व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि बच्चे फूल की तरह कोमल होते है। जिन्हें श्रेष्ठ संस्कार दिए जा सकते है। प्रारम्भ से ही बालकों को पापभीरुता और प्रामाणिकता की शिक्षा दी जानी चाहिए। संस्कार अमूल्य सम्पदा है। इससे मानवजीवन सफल और सार्थक बनता है। उन्होंने कहा – ''अभिभावकों को भी ज्ञानशाला के महत्व को समझना जरूरी है''।

ज्ञानशाला के बच्चे सुबह से ही पुलकित थे क्योंकि आज उन्हें गुरुदेव के सामने मंच पर उनका स्वागत करते हुए गीतिका जो प्रस्तुत करनी थी। कार्यक्रम का संचालन मोहजीतकुमार ने किया।

<u>विद्यार्थी जीवन में अनुशासन परमावश्यक</u>

– मुनि कमल कुमार

रतनगढ। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशानुसार राजस्थान पॉलीटेक्नीकल महाविद्यालय प्रांगण में मुनिश्री कमलकुमारजी, मुनि चैतन्य कुमार ''अमन'' का विद्यार्थियों को सम्बोधित करने पधारे। इस अवसर पर मुनिश्री कमलकुमारजी ने अपने ओजस्वी सम्बोधन करते हुए कहा – विद्यार्थी जीवन में अनुशासन परमावश्यक है। अनुशासित विद्यार्थी जीवन में अध्ययनशील व श्रमशील होता है, जो विद्यार्थी को अपने जीवन में कामयाबी देता है। विद्यार्थी को व्यसनमुक्त रहना चाहिए। व्यसन अध्ययन के साथ जीवन को बर्बाद कर देता है। व्यसनी विद्यार्थी के लिए जीवन की सफलता मात्र कल्पना हो सकती है, यथार्थ के धरातल पर वे कभी भी आगे नहीं बढ सकते। अतः विद्यार्थी जिस लक्ष्य के साथ विद्यार्थी विद्यालय, महाविद्यायल में पहुँचते है। वे अपने लक्ष्य के प्रति सदैव जागरूक रहे। यह अपेक्षित है।

मुनि चैतन्य कुमार ''अमन'' ने विद्यार्थियों को उद्‌बोधित करते हुए कहा – विद्यार्थी कॉलेज लाइफ में नॉलेज (ज्ञान) प्राप्त करने आते है। ज्ञान के साथ संस्कार प्राप्त करने का ध्येय बने। शिक्षा के साथ जब सत्संसकार जुड़ जाते है तो वह शिक्षा जीवन में उपहार बन जाती है अन्यथा जीवन के लिए भार भी बन सकती है। जैन मुनि का शिक्षा संस्थानों में जाने का एक मात्र लक्ष्य है विद्यार्थी गुडमैन (अच्छा इंसान) बने। अच्छा विद्यार्थी ही भारत का भविष्य है। भारत के सुन्दर भविष्य के लिए प्रत्येक विद्यार्थी भारत का अच्छा नागरिक बनने की दिशा में प्रस्थान करें।

जीवन विज्ञान प्रशिक्षक विनोद पासवान ने विद्यार्थियों को प्रायोगिकता में बल देते हुए विचार व्यक्त किए। विद्यालय के व्याख्याता भुवनेश चौहान, उप–प्राचार्य श्री भुवनेश चौहान ने सन्तों का भावभीना स्वागत–अभिनन्दन किया। मुख्य प्रबंधक संतोकचन्द सेठिया, प्रबंधक नवीन सेठिया ने प्रसन्नता व्यक्त की। व्याख्याता रवि शर्मा, निधि पुरोहित, प्रियंका दीक्षित ने सन्तों के समागमन को महाविद्यालय परिवार के लिए सौभाग्य का सूचक बताया। अणुव्रत समिति रतनगढ के मंत्री महावीरप्रसाद शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए इसे महत्वपूर्ण बताया।

lknj iznk'kukFkZ %
अणुव्रत 'पाक्षिक'